COURSE NAME –M.Ed IV SEMESTER
SUBJECT NAME = EDUCATION TECHNOLOGY & ICT (SC-5)

इकाई–16: ग्लेसर का बुनियादी शिक्षण प्रतिमान
(Glasser's Basic Teaching Model)

प्रस्तावना (Introduction)

राबर्ट ग्लेसर ने सन् 1962 में इस प्रतिमान का विकास किया था। इस प्रतिमान के अन्तर्गत यह मानकर चला जाता है कि "शिक्षण वह विशेष क्रिया है जो अधिगम की उपलब्धि पर केन्द्रित होती है और इस प्रकार उन क्रियाओं का अभ्यास किया जाता है, जिससे छात्रों का बौद्धिक एकीकरण और उनके स्वतन्त्र निर्णय लेने की क्षमता पहचानी जाती है।"

16.1 ग्लेसर का आधारभूत शिक्षण प्रतिमान (Glasser's Basic Teaching Model)

Bruce Joyce तथा Morsha Well ने इस प्रतिमान को 'कक्षा-कक्ष मीटिंग प्रतिमान' (Classroom Meeting Model) का नाम दिया है। इस शिक्षण प्रतिमान के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया को चार भागों में विभाजित किया गया है। वे हैं–

(1) अनुदेशात्मक उद्देश्य।

(2) प्रारम्भिक व्यवहार।

(3) अनुदेशात्मक प्रक्रिया।

(4) निष्पादन मूल्यांकन।

ग्लेसर ने इन चारों भागों को निम्न प्रकार प्रस्तुत किया है–

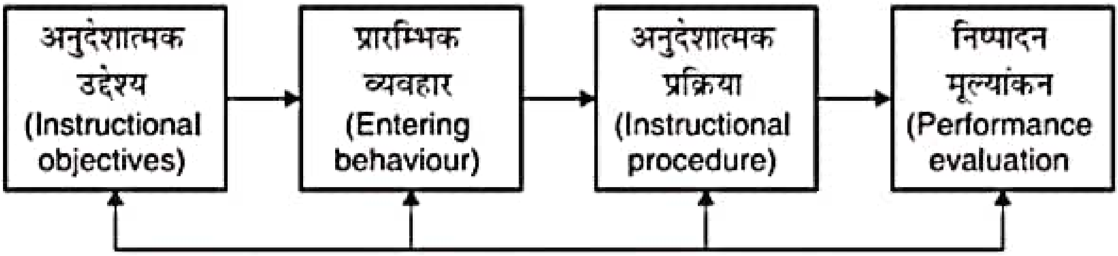

ग्लेशर का आधारभूत (बुनियादी) शिक्षण प्रतिमान

इस चित्र में शिक्षण प्रक्रिया के चारों भाग दिये गये हैं और उन्हें पृष्ठपोषण लूप से जुड़ा हुआ दिखाया गया है।

(1) अनुदेशात्मक उद्देश्य–ये वे उद्देश्य हैं जो शिक्षण शुरू करने से पूर्व शिक्षक निर्धारित करता है। ये उद्देश्य व्यावहारिक रूप से लिखे जाते हैं। ये उद्देश्य सीखने की सीमा का बोध कराते हैं। शिक्षक इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिक्षण कार्य करता है। ये शिक्षण को निश्चित दिशा प्रदान करते हैं।

(2) प्रारम्भिक व्यवहार–शिक्षण प्रक्रिया शुरू करने से पहले छात्रों के पूर्व ज्ञान, बुद्धि का स्तर, सीखने की योग्यताओं आदि का आकलन किया जाता है। सारी शिक्षण-प्रक्रिया पूर्व व्यवहारों पर आधारित होती है। छात्रों के पूर्व या प्राथमिक व्यवहारों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण-स्तर का निर्धारण किया जाता है।

(3) अनुदेशात्मक प्रक्रिया–अनुदेशात्मक प्रक्रिया का सम्बन्ध शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली क्रियाओं से होता है। इस सोपान के अन्तर्गत शिक्षण-विधि, शिक्षण प्रविधियाँ, शिक्षण सहायक सामग्री आदि का प्रयोग होता है। इसी के अन्तर्गत 'अधिगम अनुभव' प्रदान किये जाते हैं। यह शिक्षण की अन्त:क्रिया अवस्था होती है।

(4) निष्पादन मूल्यांकन–मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य होता है, अनुदेशात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति की सीमा का पता लगाना। इसमें निर्णय लिया जाता है कि मूल्यांकन कैसे किया जाये तथा किस प्रकार शिक्षण की सफलता/असफलता पता लगाया जाये इस हेतु मूल्यांकन के विभिन्न परीक्षणों (जैसे–निरीक्षण, प्रक्षेपी, तकनीकी, साक्षात्कार आदि) का प्रयोग किया जाता है जो छात्रों और शिक्षकों को पृष्ठपोषण (Feedback) प्रदान करता है। निष्पादन मूल्यांकन सत्य, विश्वसनीय, वैध, वस्तुनिष्ठ तथा प्रभावशाली होना चाहिए।

इस शिक्षण प्रतिमान को निम्नांकित प्रकार से भी प्रदर्शित किया जा सकता है–

मूलभूत संरचना	–	शैक्षणिक उद्देश्यों का निरूपण पूर्व व्यवहार का निश्चय अनुदेशात्मक प्रक्रिया निष्पादन मूल्यांकन
प्रतिक्रिया सिद्धान्त	–	अन्त:क्रिया
सामाजिक प्रणाली	–	जनतन्त्रात्मक, शिक्षक व छात्र दोनों का महत्त्व, दोनों के लिए समान अवसर
सहायक प्रणाली	–	श्रव्य-दृश्य साधन, साहित्य-पुस्तकें-पत्रिकायें

16.2 शिक्षण प्रतिमानों का उपयोग एवं महत्त्व (Importance and Utility of Teaching Models)

शिक्षण प्रतिमान, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। शिक्षण प्रतिमानों का महत्त्व इस प्रकार है–

1. ये प्रतिमान शिक्षण व्यवस्था को उन्नत बनाने के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक होते हैं। ये शिक्षण को अधिक सार्थक, उद्देश्यपूर्ण तथा प्रभावशाली बनाते हैं।
2. ये प्रतिमान, कक्षा-शिक्षण में सुधार लाते हैं और उपयुक्त वातावरण का निर्माण कर छात्रों के व्यवहारों में वांछित परिवर्तन करने में सफल होते हैं।
3. प्रतिमानों के माध्यम से शैक्षिक प्रक्रिया में शृंखलाबद्धता तथा पूर्णता रहती है, जिससे शिक्षण क्रियायें अधिक क्रमबद्ध तथा सुव्यवस्थित हो जाती हैं।
4. विद्यालयों के विभिन्न विषयों के शिक्षण में आवश्यकतानुसार विशिष्ट प्रतिमानों का प्रयोग कर उत्तम शिक्षण प्रदान किया जा सकता है।
5. शैक्षिक प्रतिमान, शिक्षण को वैज्ञानिक, नियंत्रित तथा उद्देश्य-निर्देशित बनाते हैं, जिससे छात्रों के व्यवहारों में परिवर्तन लाना सहज और सरल हो जाता है।
6. शिक्षण प्रतिमानों के आधार पर विभिन्न शिक्षण सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता है।
7. शिक्षण-प्रतिमान, शिक्षक को शिक्षण-प्रक्रिया में अनुसंधान कार्य के लिए विशाल क्षेत्र प्रदान करता है। यह नये आयाम तथा नये क्षेत्र प्रस्तुत करते हैं।
8. शिक्षण-प्रतिमान के द्वारा शिक्षण एवं अधिगम क्रियाओं के सम्बन्ध में विभिन्न शैक्षिक वातावरणों तथा विभिन्न परिस्थितियों का भी अध्ययन करना सम्भव है।
9. शिक्षण-प्रतिमान, छात्रों के ज्ञानात्मक, व्यावहारिक एवं व्यक्तिगत विकास की सम्भावनाओं को जन्म देते हैं।
10. शैक्षिक प्रतिमान पाठ्य-सामग्री को शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति का महत्त्वपूर्ण साधन मानते हैं।
11. इन प्रतिमानों का प्रयोग करके भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल नवीन प्रतिमानों का प्रतिपादन सम्भव हो सकता है।
12. शिक्षण के किसी एक या अधिक विशिष्ट उद्देश्य को प्राप्त करने में सहायक होते हैं।
13. ये व्यावहारिक प्रकृति के होते हैं और उनके द्वारा अधिगम उपलब्धि होती है।
14. शिक्षण के क्षेत्र में विशिष्टीकरण की प्रक्रिया को बल प्रदान करते हैं।
15. छात्रों में वांछित व्यवहार परिवर्तन के लिए उपयुक्त उद्दीपकों के चयन में सहायक होते हैं।
16. ये विभिन्न शिक्षण नीति, युक्ति तथा प्रविधियों के प्रयोग के लिए दिशा निर्देश देते हैं।
17. प्रत्येक प्रतिमान मूल्यांकन का एक विशिष्ट मानदण्ड प्रस्तुत करता है।
18. ये शिक्षण में परिवर्तन कर सुधार लाते हैं।